# "आत्मविश्वास बढाने में महिलाओं के लिए पहल"

**हेमलता कुमावत***

**डॉ. मंजू शर्मा****

**सारांश :**
महिलाओं का हमारे भारतीय समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है चाहे सामाजिक क्षेत्र हो या पारिवारक जीवन महिलाओं की भूमिका हर भाग मे विशेष स्थान रखती है।

प्रस्तुत शोध–पत्र "आत्मविश्वास बढ़ाने मे महिलाओं के लिए पहल" से सम्बन्धित है। महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने के सन्दर्भ में शहरों के साथ–साथ गॉवों में भी अनेक प्रकार की अनूठी पहल की जा रही है। गॉवों में होने वाले विभिन्न प्रकार के सामुहिक कार्यक्रमों व आयोजनों में महिलाओं की भागीदारी अत्यन्त प्रभावपूर्ण हो रही है। राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाएं पूर्ण जोश शोर के साथ अपनी सहभागिता प्रदर्शित कर रही हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा महिलाओ में उनके आत्मविश्वास बढ़ाये जाने का पूर्ण प्रयास किया जा रहा है तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे महिलाओं की सक्रिय भागीदारी उनके आत्मविश्वास व मनोबल को बढ़ाने में एक अनूठी पहल सिद्ध हो सकती है। यदि समाज में उपस्थित विभिन्न सामाजिक कारकों के द्वारा महिलाओं की समस्याओं का समाधान किया जाये और उन्हें समाज में उचित स्थान प्रदान किया जाये व सम्मानजनक दृष्टिकोण अपनाया जाये तो महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि स्वतः ही परिलक्षित हो जायेगी।

**शब्दकुंज–सामाजिक, आर्थिक, पहल, अधिकार, मध्यकाल ,आत्मविश्वास**

**प्रस्तावना :**
महिला समाज की आधार शिला होती है। महिलाऐं अपने प्रत्येक रूप में अपने कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों का पूर्ण रूप से सच्ची निष्ठा से निर्वाह करती है। महिलाऐं सम्पूर्ण समाज की जननी मानी जाती है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज पर परिलक्षित होता है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। महिलाओं को अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मानित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है। इसके अलावा महिलाओं को शिक्षा व ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में पूर्ण प्रतिभा मुखरित करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है परन्तु धीरे–धीरे महिलाओं की स्थिति में दर्शनीय एवं चिंताजनक परिवर्तन होने लगे हैं। वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार देखें तो महिलाओं की स्थिति में व्यापक स्तर पर परिवर्तन हुआ है। मध्यकाल में जिसनारी की स्थिति दमन और उत्पीड़न से जकड़ी हुई थी उसी नारी की वर्तमान में स्थिति काफी हद तक परिवर्तित हुई है। आज की महिलाएँ अपने प्रत्येक क्षेत्र में जागरूक प्रतीत हो रही है। महिलाओं की परिस्थितियों में बदलाव आ रहा है। पुरूषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने वाली यह आधुनिक युग की महिला की पहचान है।

महिलाएँ समाज को उन्नति पथ पर आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। समाज व देश का विकास पुरूष व महिला दोनों पर निर्भर है। इसलिए महिलाओं की पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होना आवश्यक है। मात्र एक वर्ग को अधिकार प्रदान करने या विकास करने से समाज में कभी भी संतुलन उत्पन्न नहीं होगा।

इसके लिए अत्यन्त आवश्यक है कि महिलाओ में साक्षरता, जागरूकता व आत्मनिर्भरता बढ़ाने के संगठित प्रयास किये जाने चाहिए।

**आत्मविश्वास–**
आत्मविश्वास का अर्थ है अपनी शक्ति व योग्यताओं पर विश्वास करना। आत्मविश्वास एक मानसिक शक्ति है। इससे महान कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। आत्मविश्वास व्यक्तित्व का ऐसा गुण है जिसके आधार पर व्यक्ति स्वयं में निहित क्षमताओं को पहचानता है। स्वयं को पहचानना ही आत्मविश्वास है।

* शोधार्थी(शिक्षा विभाग)

** (शिक्षा विभागाध्यक्ष) ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

**महिलाओं के लिए आत्मविश्वास का महत्वः–**

आत्मविश्वास के द्वारा ही कोई व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करता है। आत्मविश्वास के अभाव में व्यक्ति के सभीगुण व क्षमताऐं महत्वहीन हैं। आत्मविश्वास की कमी के कारण ही महिलाऐं अपने गुणों, शक्तिओं व योग्यताओं को नहीं पहचान पारही है और वर्षो से शोषण का शिकार होती रही है। सशक्त समाज के लिए सशक्तनारी का होना आवश्यक है और नारी के सशक्त होने के लिए उसमें सर्वप्रथम आत्मविश्वास होना आवश्यक है। महिलाओं से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान हेतु महिलाओं में आत्म विश्वास जागृत करना अति आवश्यक है।

**महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने के प्रयास–**

महिलाओं को आत्मविश्वासी बनाने तथा महिला सशक्तिकरण के लिए केन्द्रीय स्तर पर महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्रालय का गठन किया गया है। वैश्विक स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक अनेक संस्थाऍं एवं संगठन महिलाओं के मुद्दों पर सक्रियता से काम कर रहे हैं। रेडियो, टेलीविजन कार्यक्रमों में भी महिला सशक्तिकरण विषयक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।इन सभी से महिलाओं के सशक्तिकरण के सम्बन्ध में सूचना, समाचार संचार और प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

भारत में पंचायती राज की शुरूआत करने वाले 72वें संवैधानिक संशोधन की मदद से महिलाओं को स्थानीय विधानसभाओं और सरपंच के पद के लिए एक तिहाई आरक्षण दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाऍं कुशल तथा अकुशल दोनों प्रकार के क्षेत्रो में कार्य करती हैं, विभिन्न माध्यमों के द्वारा अपने अधिकारों व मांगों का दावा करने के लिए कामयाब हो रही हैं। सामाजिक, आर्थिक उन्नति और डिजिटल माध्यमों का प्रभावी रूप से इस्तेमाल कर अपने लिए अपने समाज में विश्वसनीयता, स्वतंत्रता और प्रतिस्पर्धा की तलाश की है। इस प्रकार के माध्यम व मंच महिलाओं में हिम्मत देते हैं और अपने अधिकारों के लिए सक्रिय होने व लड़ने में सक्षम बनाते हैं।

महिलाओं के उत्थान के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक आर्थिक नीतियॉ बनायी गई जो शुरूआती दौर में असफल रही क्योंकि ग्रामीण महिलाओं को इसकी पूर्ण व सक्रिय जानकारी प्राप्त नहीं थी परन्तु वर्तमान में ग्रामीण महिलाओं में इन एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई तथा इसके चलते महिलाएं अपनी झिझक व कमजोरियो को दूरकर पाई और संपत्ति व सामान का क्रय–विक्रय और मंहगे साहूकारों के बजाय बैंक से ऋण लेने में सक्षम हुई। स्व–सहायता समूहों में महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया उनके जीवन में वित्तीय स्थिरता उत्पन्न की जिससे महिलाएं उन्नति के मार्ग पर अग्रसार हुई जिसके द्वारा महिलाओं में आर्थिक सुदृढ़ता उत्पन्न हो गई और वह स्वयं आत्मनिर्भर बन गई।

महिलाऍं जो पर्यावरण की दृष्टि से जाग्रत हैं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं और डिजिटल रूप से सचेत हैं, अंततः देश के राजनीतिक फलक पर एक लोकतांत्रिक आवाज बन कर उभरेगी।

वर्तमान दौर में हमारे देश की महिलायें संवैधानिक अधिकारों की दृष्टि से कमजोर नहीं हैं परन्तु फिर भी वेवर्तमान में उतनी सुरक्षित और सम्मानित नही है जितने उन्हे अधिकार और उवसर संविधान द्वारा प्रदान किये गये हैं। आज भी महिलायें पीड़ित हैं, भयभीत हैं। अपने अस्तित्व के प्रति शंकित हैं। संविधान से पूर्ण प्रदत्त अधिकार प्राप्त महिलाएं अपराध का शिकार हैं आज हमें महिला सशक्तिकरण के दिखावटीपन से मुक्त होकर उन्हें भयमुक्त बनाने का प्रयास करना चाहिये।

आत्मविश्वास के अभाव में महिला सशक्तिकरण की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए महिलाओं को सशक्त बनने के लिए सभी प्रकार से आत्मनिर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है। सरकार के द्वारा महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के लिए बनाये नियमों के साथ–साथ अनेक महिला संगठनों ने भी अपने स्तर पर महिलाओं को सशक्त करने के प्रयास किये हैं, जिसके द्वारा महिलाओं में आत्म विश्वास भी बढा है और विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की ताकत भी आयी है।

महिला सशक्तिकरण व आत्मविश्वास के लिए आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी आयामों को लागू करना होगा।सामाजिक रूप से महिलाओं की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाये, आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जाए। महिलाओं को उनके मूल्य मान्यताओं व संवेदनाओं के प्रति जागरूक किया जाए महिलाओं को वो सभी संसाधन व सुविधाएं उपलब्ध करवायी जाए जिनकी सहायता से समाज का विकास महिलाओं के सहयोग व कार्यों के द्वारा विकसित होकर उन्नति कर सके। महिलाओं की शक्ति व आत्मविश्वास उनके सशक्त विचारों की जड़ में परिलक्षित होती है।

**महात्मा गॉधी जी के अनुसार–**

''हमारा पहला प्रयास अधिक से अधिक महिलाओं को उनके वर्तमान स्थिति के प्रति जागरूक करना होना चाहिए।''

यदि हम ये कहें कि महिलाओं को आत्मविश्वासी बनाकर वांछित सफलता प्राप्त की जा सकती है तो यह सफलता सिर्फ एक ही दिशा से प्राप्त नहीं की जा सकती है। महिलाओं को आत्म विश्वासी बनाने में कई आयाम, कई दिशाएँ हो सकते हैं जिनकों आधार बनाकर महिलाएँ आत्मनिर्भर व आत्मविश्वासी बनने में सक्षमता प्राप्त कर सकती हैं।

**निष्कर्ष :**

महिलाओं में आत्मविश्वास एक सशक्तिकरण एक सर्वागीण एवं बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह राष्ट्र के निर्माण व उन्नति की दिशा में महिलाओं की पर्याप्त व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है।

महिलाओं की शक्ति व आत्मनिर्भरता एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जागरूकता, कार्यशीलता, बेहतरनियंत्रण के लिए महिलाएँ जागरूक व स्वतंत्र होती हैं।

वर्तमान में महिलाओं के प्रति बहुआयामी दृष्टिकोण के कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक विधिक स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक पहलुओं में महिलाओं की सक्रिय व सार्थक भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पायी है जिसके कारण पूर्ण रूप से विकास लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पा रही है।

अतः महिला आत्मविश्वास आवश्यकता नहीं अनिवार्यता है यदि देश व समाज की उन्नति व विकास चाहिए तो महिलाओं को सभी अधिकार, सम्मान व प्रतिष्ठा प्रदान किये जाएं जिसकी वह पूर्ण रूपेण हकदार है। अतः सरकार के द्वारा ग्रामीण व शहरी सभी क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मविश्वासी व आत्म निर्भर बनाने के लिए अनेक प्रयास व योजनाएँ निर्धारित की गई हैं तथा सरकार और अधिक प्रयासरत हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए केन्द्रीय स्तर पर महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का गठन भी किया गया है। वैश्विकस्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक अनेक संस्थायें एवं संगठन, महिलाएं आत्मविश्वास के बल परदेश के विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सके।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–**


- डॉ. गया सिंह, डॉ. अनिलकुमारराय ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ''आर.लाल. बुकडिपो।
- w.www. techgurukayyon.com
- International Journal of ?Applied Rearch] 2016 2(5)2016-219
- डॉ. प्रेमचन्दगोस्वामी (2006) ''नारी शक्ति से समाजपरिवर्तन''महेशबुकडिपो, जयपुर।
- संगीता शर्मा, राजेशकुमार शर्मा (2006) ''महिलाविकास एवंराजकीय योजनाएँ''रितुपब्लिकेशन्स, जयपुर।
- http://mhindiwebdunia.com